International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(2): 07-09

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2): 07-09
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 05-01-2017
Accepted: 06-02-2017

डॉ0 राज पाल
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
सी0आर0 किसान महाविद्यालय,
जीन्द, हरियाणा, भारत

Correspondence
डॉ0 राज पाल
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
सी0आर0 किसान महाविद्यालय,
जीन्द, हरियाणा, भारत

''अभिज्ञानशाकुन्तलम्'' में सामाजिक चेतना : एक विवेचन

डॉ0 राज पाल

1. प्रस्तावना

महाकविकालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में आदर्श भारतीय जीवन का चित्रण है तथा यह कालिदास की सर्वोत्तम कृति है। इससे सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य नाटक की परम्परा का चरमोत्कर्ष माना जाता है। वस्तुतः अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। महाकवि ने व्यवहारिक धरातल पर उतर कर जिन मानव मूल्यों को प्रस्तुत किया है वे अन्यत्र दुलर्भ हैं।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में दुष्यन्त व शकुन्तला के प्रणय–वियोग एवं पुनर्मिलन की कथा का वर्णन है। जिसका सात अंकों में रसग्राही वर्णन किया गया है। इसकी कथावस्तु राजा दुष्यन्त द्वारा दिए गए अभिधान (अंगूठी) के इर्द–गिर्द चक्कर काटती है। नाटक में विभिन्न घटनाओं की योजना इस प्रकार की गई है कि कथा विकास में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ती अपितु छोटी से छोटी घटना का भी उसमें महत्व है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् का सामजिक, राजनैतिक, जीवनमूल्य आदि की दृष्टि से बड़ा महत्त्व है। नाटक में प्रयुक्त की गई पंक्तियां तथा श्लोक बड़े ही महत्त्वपूर्ण प्रेरणादायक तथा शिक्षाप्रद है। प्रस्तुत नाटक में जो बातें कालिदास ने उस समय कही थी जो वो वर्तमान के संदर्भ में जीवन उपयोगी है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में वर्णित सामाजिक चेतना इस प्रकार हैः–

2. राजा के कर्त्तव्य तथा राजा के गुण

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पंचम अंक में दिखाया गया है कि राजा धर्मासन से उठा ही था कि कण्व के शिष्य पहुंचे। कांचुकी राजा को उनके आगमन की सूचना देने से संकोच करता है परन्तु उसे तुरन्त राजधर्म की अपरिहार्यता का ध्यान आता है –

भानुः सकृद्युक्ततुरङ्ग एवं रात्रिंदिवं गन्धवह प्रयाति।
अवेक्ष्य दाह्यं न शामोऽस्ति–बह्नेः षष्ठांशवृत्तेरपि धर्मः एषः।।[1]

भाव यह है कि सूर्य वायु एवं अग्नि कहीं से वेतन नहीं लेते हैं। सूर्य भी बिना किसी विश्राम के संसार को प्रकाशित करता है, वायु निरन्तर चलती रहती है, अग्नि अपना कार्य करती है। राजा तो अपनी प्रजा से उसकी आय का छटा भाग वृत्ति के रुप में ग्रहण करता है। अतः प्रजा का पालन करना उसका कर्त्तव्य है। यह प्रसंग वर्तमान संदर्भ में राजनेताओं के लिए बड़ा ही महत्त्व रखता है। जो स्वार्थवश कार्य करते हैं। एक जगह सूत्रधार द्वारा कहा गया है कि –

प्रजाः प्रजा स्वा इव तन्त्रयित्वा निषेवते शान्तमना विविक्तम्।
यूथानि संचार्य रिवप्रतप्तः शीतं दिवा स्थानमिव दिपेन्द्र :।[2]

अर्थात् अपनी सन्तान के समान प्रजा का पालन करके शान्त मन वाले राजा दुष्यन्त एकान्त का सेवन कर रहे हैं। राजा का कर्त्तव्य है प्रजा की रक्षा करना यहां पर राजनेताओं के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण शिक्षा दी गई है।

3. मानव स्वभाव की स्वभाविक वृत्तियों का निर्देशन

महर्षि कण्व अपनी पालित कन्या की विदाई से दुखी है तथा सोचते हैं :–

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्कपृष्टमुक्तकण्डया
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृतिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्
वैकलव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयविश्लेषदुःखैर्नवैः।।[3]

अर्थात् शकुन्तला आज चली जाएगी हृदय व्याकुल हो रहा है। गले से आवाज नहीं निकल रही है। आँसुओं के कारण गला रूंध गया है। यहां मानव मन की स्वभाव की वृत्तियों का निर्देशन किया गया है। चतुर्थ अंक के एक श्लोक में –

अर्थो कि कन्या परकीय एव तामघ सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातोऽस्मि सधो विशदन्तरात्मा चिरस्य निक्षेपमिवार्ययित्वा।।[4]

अर्थात् कन्या पराया धन है उसे पति के पास भेजकर मानो किसी धरोहर को उसके स्वामी को सौंपकर शांत मन वाला हो गया हूं। श्लोक के माध्यम से मानव मन का स्वाभाविक चित्रण किया गया है कि किस प्रकार व्यक्ति कारुणिक हो जाता है।

4. आपसी प्रेम तथा लगाव

आश्रम से विदा होते हुए शकुन्तला अनेक करुणा भावनाओं से भरी हुई है। उस समय शकुन्तला के प्रति प्रेमभाव तथा करुणा दिखाते हुए पेड़–पौधों की दशा वर्णन करते हुए कहा गया है –

उद्गलितदर्भकवला मृगाः परित्यक्तनर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।।[5]

आश्रम के जन्तुओं, पशु–पक्षियों की दशा दयनीय तथा सोचनीय है। मोरों ने नाचना बंद कर दिया है। हिरणों ने घास खाना छोड़ दिया है। लताएं पीले पत्तों को गिराती हुई मानों आँसू बहा रही हो। यहां पशु–पक्षियों तथा पेड़–पौधों के माध्यम से आपसी प्रेम तथा लगाव की शिक्षा दी गई है। यदि पेड़–पौधों इतनी आत्मीयता प्रेम दिखा सकते हैं तो मानव को भी आपसी प्रेम तथा भाईचारे से रहना चाहिए। किसी प्रकार का द्वेष नहीं करना चाहिए।

5. अतिथि सत्कार

शास्त्रों में कहा गया है कि 'अतिथि देवो भवः' इसी पंक्ति को कालिदास ने चरितार्थ करते हुए लिखा है – जब राजा दुष्यन्त महर्षि कण्व से मिलने आश्रम में जाते हैं तो उस समय राजा को पता चलता है कि महर्षि कण्व शकुन्तला को अतिथि सत्कार के लिए नियुक्त करके सोमतीर्थ पर गए हैं। शकुन्तला भी राजा दुष्यन्त का अतिथि सत्कार करती है। इसी प्रकार शाकुन्तलम् में पंक्तियों के माध्यम से अतिथि सत्कार की भावना को जागृत किया गया है।

6. सुख–दुःख का स्वाभाविक वर्णन

चतुर्थ अंक में महर्षि कण्व के शिष्य प्रभात का वर्णन करते हुए कहते हैं कि :–

पादन्यासं क्षितिधर गुरोर्मूर्ध्नि कृत्वा सुमेरोः
क्रातं येन क्षपिततमसा मध्यमं धाम विष्णोः
सोऽयं सोमः पतति गगनादल्पशेषैर्मयूरवैः
दूररोहो भवति महतामप्यनपभ्रंशनिष्ठः[6]

अर्थात् चन्द्रमा रात्रि में सूर्य के द्वारा भी दूर न किए जाने वाले अन्धकार को नष्ट कर देता है। सुमेरु पर्वत पर भी अपने चरण डालने में समर्थ है। बड़ों का दूर तक चढ़ना पतन में परिवर्तित करने वाला होता है।

उपर्युक्त श्लोक के माध्यम से लौकिक शाश्वत् सत्य का उद्घाटन किया गया है कि कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में कितने ऊँचे व प्रतिष्ठित पद पर चला जाए कितना ही महान क्यों न बन जाए एक दिन पतन निश्चित है। यहाँ मनुष्य को अहंकारी न बनने की ओर संकेत किया गया है कि उत्थान और पतन एक सिक्के के दो पहलू हैं।

7. लोकव्यवहार का उत्तम उदाहरण

कालिदास ने चतुर्थ अंक में महर्षि कण्व द्वारा दुष्यन्त को भिजवाया गया संदेश लोकव्यवहार की दृष्टि से उपर्युक्त है कि कन्या पक्ष, वर पक्ष के समक्ष विनम्रता प्रदर्शित करता है। सामाजिक मर्यादाओं लोक परम्पराओं का ध्यान रखा गया है।

8. विवेकपूर्ण निर्णय से वर–वधू का चयन

कालिदास ने शाकुन्तलम् के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया है कि वर–वधू का चयन विवेक से करना चाहिए। शाकुन्तलम् में शकुन्तला और दुष्यन्त गांधर्व विवाह कर लेते हैं परन्तु बाद में दुष्यन्त शकुन्तला को अपनाने के लिए मना कर देना है। यह हमारे समाज के लिए उन लड़कियों को भी प्रेरणा देने वाला है जो भावनाओं में बहकर विवाह कर लेती हैं। जिसकी परिणति दुखान्त होती हैं तथा पछताना पड़ता है।

9. आदर्श भारतीय संस्कृति का चित्रण तथा उपदेश

भारतीय संस्कृति का उज्जवल एवं आदर्श रुप चतुर्थ अंक में प्रस्तुत किया गया है। जब शकुन्तला विदा होती है तो उस समय महर्षि कण्व शकुन्तला को उपदेश देते हुए कहते हैं कि –

शुश्रूस्व गुरुन्कुरु प्रियसखीवृतिं सप्तनीजने
भतुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी,
यान्तन्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामा कुलस्याधयः।[7]

अर्थात् सास ससुर की सेवा करना, सौतों के साथ प्रियसखी जैसा व्यवहार करना, क्रोध के कारण पति के विपरीत मत होना, सेवकजनों के प्रति उदार बनना, अपने भाग्य पर घमण्ड ना करना, इस प्रकार की युवतियां उच्च पद (सम्मान) प्राप्त करती हैं। इसके विपरीत आचरण करने वाली कुल के लिए मुसीबत बन जाती है। यदि हमारा समाज इससे प्रेरणा ले तो समाज में किसी प्रकार का कलह इत्यादि नहीं होगा।

10. वन्य सरंक्षण तथा पशु प्रेम भावना

वन्य सरंक्षण तथा पशु प्रेम की ओर भी कालिदास का ध्यान गया है–द्वितीय अंक में राजा दुष्यन्त कहता है–

गाहतां महिषा निपातसलिलं श्रृडैर्मुहुस्ताडितं
छायाबद्धकदम्बकं मृगकुलं रोमन्थमभ्यस्तु।
विश्रब्धं क्रियतां वराहततिभिर्मुस्ताक्षतिः पल्वले
विश्रान्तिं लभतामिदं च शिथिलज्याबन्धमस्मद्रनुः।

जंगली भैंसे निर्भय होकर विचरा करे हिरणों के झुण्ड छाया में जुगाली करे सुअरों के झुण्ड निर्भय होकर तालाब में मोथा उखाड़ें। उपर्युक्त श्लोक के माध्यम से मानव तथा समाज को वन्य प्राणी सरंक्षण की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है कि वन्य प्राणियों का सरंक्षण भी आवश्यक है। एक प्रसंग में राजा दुष्यन्त शिकार कर रहा होता है तो जब राजा और हिरण के बीच में तपस्वी आ जाते हैं और कहते हैं कि – आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो हन्तव्य : इस प्रकार वन्य प्राणी की सुरक्षा की दृष्टि से बड़ा ही महत्त्वपूर्ण कदम उठाया गया है।

11. वृक्षों के प्रति प्रेम

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में वृक्षों के प्रति प्रेम करने की सलाह दी गई

है। अर्थात् वृक्षों से हमे।सब कुछ मिलता है। एक प्रसंग में जब शकुन्तला को महर्षि कण्व उसके पति दुष्यन्त के पास भेजते हैं तो वे पेड़ पौधों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि :

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या नादते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आघे वः कुसमप्रवृतिसमये यस्या भवत्युत्सवः सेयं याति शकुन्तला, पतिगृहं सर्वेरनुज्ञायताम्।।[8]

अर्थात् हे वृक्षों वह शकुन्तला जो तुम्हारे जल पीने से पहले जल पीने का प्रयन्त नहीं करती थी आभूषण होने पर भी आपके पल्लवों को नहीं तोड़ती थी। तुम पर पहली बार फूल आने का समय जिसके लिए उत्सव हो जाता था वही शकुन्तला अपने पति के घर जा रही है, इसे आज्ञा दो। उपर्युक्त श्लोक के माध्यम से शिक्षा दी गई है कि पेड़–पौधों को काटना नही।चाहिए बल्कि उनकी रक्षा करनी चाहिए। पेड़–पौधे हमारे जीवन का आधार हैं। यहां पर्यावरणीय महत्तव पर प्रकाश डाला गया है। उपर्युक्त श्लोक हमें पेड़–पौधों की रक्षा तथा पर्यावरण को बचाने की प्रेरणा प्रदान करता है।

12. परोपकारिता की ओर संकेत

सातवें अंक में राजा दुष्यन्त मारीच की दिव्यता का वर्णन करते हुए कहता है कि –

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमै र्नवाम्बुभि र्भूरिविलम्बिनो घनाः।
अनुद्ता सतपुरुषाः समृद्धिभिः स्वभावएषः परोपकारिणाम्।।[9]

एवं

उदेति पूर्व कुसुमं – ततः फलं धनोदयः प्राक्तदन्तरं पयः।
निमितनैमितिकयोरयं क्रमस्तव प्रसादस्य पुरस्तु संपदः।।[10]

अर्थात् फल वाले वृक्ष झुकते हैं, जल से भरे होने पर बादल बरसते हैं। समृद्धि आने पर सज्जन व्यक्ति सरल रहते हैं। वृक्ष पर पहले पुष्प आते हैं फिर फल आता है। आकाश में पहले बादल दिखाई पड़ते, फिर वर्षा होती है। प्राकृतिक चीजें, वृक्ष, बादल सभी निःस्वार्थ सेवा करते हैं इसी प्रकार मानव को परोपकारी होने की प्ररेणा दी गई है। पाँचवें अंक में भी कहा गया है कि वायु दिन–रात बहता रहता है। ठीक इसी प्रकार मानव को भी इससे प्रेरणा लेकर परोपकारी होना चाहिए। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में विविध भावों व अवस्थाओं का वर्णन रुपकों में युद्ध मृगया हास्य, धर्म, अर्थज्ञान, योग शान्ति आदि का विवरण है। जिनसे जीवन का उपदेश मिलता है। अभिनय देखकर सामाजिक प्राणी स्वतः ही अपने चरित्र को सुधारने की कोशिश करता है। मनुष्यों देवताओं, राजाओं, तपोवनवासियों के वृत्तान्त के माध्यम से लोगों में नाट्य का असल उद्देश्य है। सचमुच नाटक धर्म, यश, आयु कल्याण एवं बुद्धि विवर्धन करने वाला तथा सदाचार की परिकल्पना करने वाला है। कालिदास ने मनुष्यों के साथ–साथ पशु–पक्षियों के भावों एवं क्रियाओं का भी प्रदर्शन किया है। प्रकृति के प्रति अनुराग के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि प्रकृति के प्रति प्रेम रखें। राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया है, वनस्पति, नदी, तालाब, गांव आदि के माध्यम से भारतीय संस्कृति की गौरव गाथा के माध्यम से भारतीय संस्कृति को जीवन्त रखने की प्रेरणा दी गई है। राजनीति एवं राजमर्यादा का स्वानुभव कलात्मक ढ़ंग से प्रस्तुत करके समाज को प्रेरणा प्रदान की है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में स्नेह, सौहार्द, तेज, करुणा आदि गुणों के माध्यम से समाज को इन गुणों की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी गई है। भारतीय संस्कृति का बड़ा मार्मिक एवं उज्ज्वल रुप प्रस्तुत किया गया है। शकुन्तला के चरित्र के माध्यम से समाज को शिक्षा दी गई है। महर्षि कण्व ने जो सन्देश राजा दुष्यन्त को दिया है तथा विदाई के समय शकुन्तला को जो शिक्षा दी है वह आज के युग में बहुत प्रासंगिक है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कोमल भावनाओं का अंकन किया गया है। स्नेह, सौहार्द, सहानुभूति तथा करुणा के भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति के माध्यम से सन्देश दिया गया है। जो पूरे समाज के लिए शिक्षाप्रद है। प्रकृति के मानवीकरण माध्यम से प्रकृति की रक्षा का सन्देश भी प्रस्तुत किया गया है।

विवेचन के बाद हम कह सकते हैं कि अभज्ञानशाकुन्तलम् की नाट्यकला देश, जाति तथा काल की सीमाओं में विकसित होने के कारण सार्वभौमिक सुख एवं आनन्द की धारा प्रवाहित करती है। अतिप्राचीन होने पर भी जीवन रस से सम्पुष्ट होने के फलस्वरुप आज की सजीव मालूम पड़ती है। आज के समाज में पशुधन सरंक्षण, आपसी प्रेम, महिलाओं का सम्मान, पर्यावरणीय सुरक्षा, दहेज की समस्या, राजा के कर्त्तव्य, देश प्रेम आदि की दृष्टि से वर्तमान संदर्भ में अभिज्ञानशाकुन्तलम् समाज के लिए प्रेरणादायक है तथा चेतना को जागृत करने का कार्य करता है।

13. संदर्भ सूची

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 5.3।
2. वही, 5.4।
3. वही, 4.6।
4. वही, 4.23।
5. वही, 4.12।
6. वही, 5.13।
7. वही, 4.19।
8. वही, 4.9।
9. वही, 5.13।
10. वही, 7.31।